

NCERT SOLUTIONS

CLASS - 8TH



aglasem.com

Class : 8

Subject : सामाजिक विज्ञान

Chapter : 2

Chapter Name : व्यापार से साम्राज्य तक

Q1 निम्नलिखित के जोड़े बनाए

दीवानी - भू-राजस्व वसूल करने का अधिकार

शेर-ए-मैसूर - टीपू सुल्तान

फौजदारी अदालत - फौजदारी अदालत

रानी चेन्नम्मा - कितूर में अंग्रेज़ विरोधी आंदोलन का नेतृत्व किया

सिपाही - सिपाय

वॉरेन हेस्टिंग्स - भारत का पहला गवर्नर जनरल

Answer.-

Page : 24 , Block Name : फिर से याद करें

Q2 रिक्त स्थान भरे

(क) बंगाल पर अंग्रेज़ों की जीत _____ की जंग से शुरू हुई थी।

(ख) हैदर अली और टीपू सुल्तान _____ के शासक थे।

(ग) डलहौज़ी ने _____ का सिद्धांत लागू किया।

(घ) मराठा रियासते मुख्य रूप से भारत के _____ में स्थित थी।

Answer.(क) प्लासी

(ख) मैसूर

(ग) विलय नीति

(घ) दक्षिण पश्चिम

Page : 24 , Block Name : फिर से याद करें

Q3 सही या गलत बताएँ

(क) मुगल साम्राज्य अठारवीं सदी में मजबूत होता गया।

(ख) इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी भारत के साथ व्यापार करने वाली एकमात्र यूरोपीय कंपनी थी।

(ग) महाराजा रंजीत सिंह पंजाब के राजा थे।

(घ) अंग्रेजों ने अपने कब्जे वाले इलाकों में कोई शासकीय बदलाव नहीं किये।

Answer. (क) गलत

(ख) गलत

(ग) सही

(घ) गलत

Page : 25 , Block Name : फिर से याद करें

Q4 यूरोपीय व्यापारिक कंपनियाँ भारत की तरफ क्यों आकर्षित हो रही थी?

Answer. यूरोपीय व्यापारिक कंपनियाँ भारत की तरफ आकर्षित इसलिए हो रही थी क्योंकि-

→ भारत में निर्मित बारीक सूती कपड़ों एवं रेशम के कपड़ों की यूरोपीय बाजारों में काफी माँग थी।

→ भारत में मसालों का उत्पादन उस समय के हिसाब से सबसे ज्यादा था और इन मसालों की गुणवत्ता बहुत अच्छी थी जिस वजह से इन मसालों की माँग भी पूरे यूरोपीय क्षेत्र में थी।

→ जो भी उत्पाद ये यूरोपीय व्यापारी भारत से आयात करते थे उनकी कीमत काफी कम होती थी जिस वजह से वे व्यापारी उन्हीं चीजों को यूरोप ले जाकर काफी ज्यादा लाभ के साथ बेचते थे।

Page : 25 , Block Name : आइए विचार करें

Q5 बंगाल के नवाबों और ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच किन बातों पर विवाद थे?

Answer. बंगाल के नवाबों और ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच निम्न बातों पर विवाद थे-

नवाबों ने कंपनी को व्यापार में कोई भी रियायत देने से मना कर दिया अपितु वे कंपनी से नज़रानो की माँग करने लगे।

→ नवाबों ने कंपनी पर धोखाधड़ी के आरोप लगाना शुरू कर दिए और दलील दी कि कंपनी कि वजह से सरकार के राजस्व वसूली में कमी हो रही थी।

→ वही ईस्ट इंडिया कंपनी भी टैक्स नहीं चुकाना चाह रही थी और कंपनी के अफसर नवाबों को अपमान जनक चिट्ठी लिखने लगे।

→ कंपनी का मानना था कि नवाबों की बेतुकी शर्तों से व्यापार तबाह हो रहा है और व्यापार को फलने फूलने के लिए सरकार को शुल्क वापस लेने होंगे।

Page : 25 , Block Name : आइए विचार करें

Q6 दीवानी मिलने से ईस्ट इंडिया कंपनी को किस तरह फायदा पहुँचा ?

Answer. दीवानी मिलने से ईस्ट इंडिया कंपनी को निम्न तरह फायदा पहुँचा-

→ दीवानी मिलने से ईस्ट इंडिया कंपनी को बंगाल के विशाल राजस्व संसाधनों पर नियंत्रण मिल गया जिससे उनके सामने नवाबों की शक्ति कम होने लगी।

→ दीवानी मिलने से कंपनी को अब ब्रिटेन से सब चांदी आयात करके भारतीय उत्पादों को खरीदने की जरूरत नहीं थी क्योंकि अब कंपनी के पास भारत से होने वाली आमदनी से ही आयात करने के लिए पर्याप्त धन मौजूद था।

→ दीवानी मिलने के साथ ही कंपनी ने अपनी विस्तारवादी नीति को शुरू किया और किलों और दफ्तरों का निर्माण शुरू किया।

Page : 25 , Block Name : आइए विचार करें

Q7 ईस्ट इंडिया कंपनी टीपू सुल्तान को खतरा क्यों मानती थी?

Answer. ईस्ट इंडिया कंपनी टीपू सुल्तान को खतरा इसलिए मानती थी क्योंकि-

→ मालाबार तट पर होने वाला व्यापार मैसूर रियासत के अंतर्गत आता था और टीपू सुल्तान वहाँ के शासक थे। टीपू सुल्तान ने 1785 में अपनी रियासत में पड़ने वाले बंदरगाहों से चंदन की लकड़ी व मसालों के निर्यात पर रोक लगा दी एवं स्थानीय सौदागरों को भी कंपनी के साथ कारोबार करने से रोक दिया जिससे कंपनी को काफी नुकसान हुआ।

→ मैसूर के शासक टीपू सुल्तान ने फ्रांसीसी व्यापारियों के साथ भी काफी घनिष्ट सम्बन्ध विकसित किये जो ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रतिद्वंद्वी थे और उनसे टीपू सुल्तान ने अपनी सेना का आधुनिकीकरण भी करवाया जिससे कंपनी के अफसर घबरा गए।

Page : 25 , Block Name : आइए विचार करें

Q8 "सब्सिडियरी एलायंस" (सहायक संधि) व्यवस्था की व्याख्या करें।

Answer. सहायक संधि के माध्यम से कंपनी अपना वर्चस्व पूरे भारत में फैलाना चाहती थी। इसके अनुसार जो भी रियासत इस बंदोबस्त को मान लेती है उसे अपनी स्वतंत्र सेनाएँ रखने का अधिकार नहीं रहता था। उसे कंपनी की तरफ से सुरक्षा मिलती थी और इस सुरक्षा के बदले रियासत कंपनी को रकम का भुगतान करती थी। अगर कोई शासक रकम अदा करने में चूक जाते थे तो कंपनी उनके अधिकार क्षेत्र का हिस्सा जुर्माने के तौर पर कब्ज़ा लेती थी। यह संधि अंग्रेज़ों की विस्तारवादी नीति का एक प्रमुख हिस्सा थी। इस व्यवस्था के कारण अवध के नवाब को अपना आधा इलाका कंपनी को सौंपना पड़ा था क्योंकि उनके पास सहायक सेना के भुगतान के लिए पैसे नहीं थे।

Page : 25 , Block Name : आइए विचार करें

Q9 कंपनी का शासन भारतीय राजाओं के शासन से किस तरह अलग था?

Answer. कंपनी का शासन भारतीय राजाओं के शासन से निम्न तरह अलग था-

→ कंपनी का शासन सीधे सीधे गवर्नर जनरल के हाथों था, वही भारतीय शासन में यह ताकत राजा या नवाबों के हाथों में होती थी।

→ कंपनी के शासनकाल में हर ज़िले में फौजदारी और दीवानी अदालत अलग अलग थी वही भारतीय शासक ने ऐसी कोई व्यवस्था नहीं बनाई थी।

→ हर ज़िले में एक कलेक्टर की अहम भूमिका होती थी उसका मुख्य काम लगान वसूलना और सभी सरकारी महकमों के आपसी तालमेल से ज़िले की कानून व्यवस्था को बनाए रखना होता था।

Page : 25 , Block Name : आइए विचार करें

Q10 कंपनी की सेना की संरचना में आये बदलावों का वर्णन करें।

Answer. कंपनी जब भारत आई थी तो ये भी मुगलों की तरह घुड़सवारों पर ज्यादा केंद्रित थी। लेकिन जब अवध और बनारस जैसी रियासतों में किसानों को भर्ती कर उन्हें पेशेवर सैनिक प्रशिक्षण दिया जाने लगा तो ये सूरत बदलने लगी। उन्नीसवीं सदी के साथ ही घुड़सवारों की जरूरत कम पड़ने लगी। अंग्रेज़ अपनी सेना को सिपाय आर्मी कहते थे।

नयी भर्ती सैनिकों को मस्कट और मैचलॉक से लैस किया जाता था और अब अंग्रेज़ों के लिए पैदल टुकड़ी ज्यादा महत्वपूर्ण होती जा रही थी तथा सैन्य जीवन भी अब काफी ज्यादा अनुशासनात्मक हो गया था।

Page : 25 , Block Name : आइए विचार करें